अध्याय १

अर्थशास्त्रा की अवधारणा एवं अर्थशास्त्र मे सांख्यिकी का महत्व

- उपभोक्ता, उपभोग, उत्पादक, उत्पादन, निवेश
- आर्थिक, क्रियाए
- अनार्थिक क्रियाएं
- दुर्लभता
- अर्थशास्त्र मे सांख्यिकी का महत्व
    १) आर्थिक समस्याओं की परिमाणात्मक अभिव्यक्ति
    २) अन्तर क्षेत्रीय तथा अन्तर समय तुलनाएं
    ३) कारण परिणाम सम्बन्ध ज्ञात करना
    ४) नीतियों का निर्माण
    ५) आर्थिक भविष्यवाणी
- सांख्यिकी एक वचन तथा बहुवचन के रूप में।
- सांख्यिकी अध्ययन की अवस्थाएं
    १) आकड़ों का संकलन २) आकड़ों का व्यवस्थीकरण
    ३) आकड़ों का प्रस्तुतीकरण ४) आकड़ों का विश्लेषण
    ५) आकड़ों का निर्वचन

<u>अति लघु उत्तरीय प्रश्न उत्तर</u> (१ अंक)

१. आर्थिक क्रिया की परिभाषा दो।
    – वह क्रियाएँ जिनका संबन्ध आय सृजन करना
२. अनार्थिक क्रियाओं के दो उदाहरण दीजिए।
    – धार्मिक क्रिया कलाप
    – माँ का घरेलू कार्य

३. उत्पादन से आप क्या समझते हैं।

उत्पादन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कच्चेभाल को उपयोगी वस्तुओं ने परिवर्तित किया जाता है।

<u>लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर</u> **(३/४ अंक)**

१. आर्थिक क्रियाओं की परिभाषा उदाहरण सहित दीजिए।

आर्थिक क्रियाओं का संबन्ध धन के उपार्जन से है। उत्पादन। विनिवेश आर्थिक क्रियाओं के प्रभुद्ध उदाहरण है।

२. अर्थशास्त्र मे साख्यिकी के दो उपयोग समझाइए।

– आर्थिक समस्याओ की परिमाणात्मक अभिव्यक्ति

– नीतियों का निर्माण (व्याख्या कीजिए)

अध्याय २

आकड़ो का संकलन

आंकड़ों के स्त्रोत

१. प्राथमिक स्त्रोत

२. द्वितीयक स्त्रोत

प्राथमिक तथा द्वितीयक आकड़ों में मुख्य अंतर

१. मौलिकता में अंतर

२. उद्देश्य की उपयुक्तता में अंतर

३. संकलन लागत मे अंतर

अच्छी प्रश्नावली के गुण

१. प्रश्नों की क्रम संख्या

२. सरलता

३. उचित क्रम

४. निर्देश

५. गणना

द्वितीयक आंकड़ो का संकलन

१. प्रकाशित स्त्रोत

२. अप्रकाशित स्त्रोत

- सरकारी प्रकाशन
- अच्छी सरकारी प्रकाशन
- समितियों व आयोगों की रिपोर्ट
- व्यापारिक संघों के प्रकाशन

द्वितीयक आकड़ो के दो महत्वपूर्ण स्त्रोत

१. भारत की जनसंख्या

२. राष्ट्रीय सैम्पल सर्वे संगठन की रिपोर्ट

<u>अति लघु उत्तरीय प्रश्न उत्तर</u>

१. आकड़ो के दो प्रमुख स्त्रोत कौन हैं?

१) प्राथमिक स्त्रोत २) द्वितीयक स्त्रोत

२. द्वितीयक आंकड़ो के दो प्रमुख स्त्रोत कौन से है?

१) सरकारी प्रकाशन २) भारत की जनसंख्या

३) राष्ट्रीय सैम्पल सर्वे संगठन की रिपोर्ट

<u>लघु उत्तरीय प्रश्न उत्तर</u> (३/४ अंक)

१. प्राथमिक तथा द्वितीयक आंकड़ो के स्त्रोत में अन्तर कीजिए।

१) मौलिकता में अंतर २) संकलन लागत में अंतर

३) उद्देश्य की उपयुक्तता में अन्तर

२. अच्छी प्रश्नावली के गुण लिखें।

१) प्रश्नों की कम संख्या २) सरलता

३) उचित क्रम ४) गणना

३. प्राथमिक आकड़े एकत्रित करने की मुख्य विधियां कौन सी है।

मौलिक विधि
जनसंख्या विधि } – व्याख्या करें

<u>दीर्घ उत्तरीय</u> (६ अंक)

१. द्वितीयक आंकड़ो के संकलन की व्याख्या कीजिए।

१) प्रकाशित स्त्रोत –

सरकारी प्रकाशन अर्ध्द सरकारी प्रकाशन

समितियों व आयोगों की रिपार्ट सरकार

विश्व विद्यालय निजी संस्थाएं

अध्याय ३

आंकडों का व्यवस्थितीकरण

[Organisation of Data]

वर्गीकरण : वर्गीकरण वह क्रिया है जिसके द्वारा समान तथा असमान आंकडों को विभिन्न वर्गों में क्रम के अनुसार प्रस्तुत किया जाता है।

वर्गीकरण के उद्देश्य:–

१. आंकडों को सरल व संक्षिप्त बनाना।

२. आंकडों की समरुपता को प्रकट करके उनकी उपयोगिता में वृद्धि करना।

३. आंकडो के विशिष्ट अन्तर स्पष्ट करना।

४. आंकडो को आकर्षक तथा प्रभावशाली बनाना।

५. आंकडों को व्यवस्थित रुप में वैज्ञानिक आधार प्रदान करना।

सांख्यिकी श्रंखला

सांख्यिकी में श्रंखला उन आंकडों को कहते हैं जो किसी तर्क पूर्ण क्रम के अनुसार व्यस्थित किए जाते हैं।

सांख्यिकी श्रंखलाओं के प्रकार:–

व्यक्तिगत श्रंखला　　आवृत्ति वितरण श्रंखला

क्रमानुसार　　अवरोही क्रम　　खंडित श्रंखला　　अखंडित श्रंखला

समावेशी　　अपवर्जी

व्यक्तिगत श्रंखला : इकाई का अलग–अलग माप प्रकट किया जाता है।

यह दो प्रकार से प्रस्तुत किया जा सकता है।

१. क्रमानुसार: मदों को किसी क्रम के अनुसार प्रकट करना।

२. अवरोही क्रम : प्रत्येक इकाई के माप को उनके बढ़ते हुए क्रम या घटते हुए क्रम के अनुसार प्रस्तुत करना।

व्यूह : आंकडो को बढ़ते हुए अर्थात आरोही या घटते हुए अर्थात अवरोही क्रम से प्रस्तुत करना।

२) आवृत्ति वितरण श्रंखला:– आवृत्ति वितरण के अनुसार श्रंखलाएँ दो प्रकार की होती है।

१. खंडित श्रंखला २. अखंडित श्रंखला

आवृत्ति वितरण धृंखलाओं से जुड़े अवधारणाएँ:

१. आवृत्ति: किसी वर्गान्तर में प्रयुक्त संख्या को आवृत्ति कहते हैं।

२. वर्ग आवृत्ति : किसी भी वर्ग में आने वाले मदों की संख्या को वर्ग आवृत्ति कहा जाता है।

१. खंडित श्रंखला: इसमें प्रत्येक मद का निश्चित माप स्पष्ट हो जाता है।

२. अखंडित श्रंखला: इस श्रंखला में इकाईयों को वर्गान्तरों में लिखा जाता है।

३. वर्ग: संख्याओ के किसी निश्चित समूह को जिसमें मदें शामिल होती है।

४. वर्ग सीमाएँ: एक वर्ग की निम्न तथा ऊपरी सीमा वर्ग सीमा कहलाती है।

५. वर्ग विस्तार : किसी वर्ग के ऊपरी सीमा तथा नियली सीमा में अन्तर को वर्ग विस्तार कहते हैं।

मध्य मूल्य : $\frac{\text{ऊपरी सीमा + निम्न सीमा}}{२}$

३. **आवृत्ति वितरण के प्रकार :**

१) अपवर्जी श्रंखला : इसमें एक वर्ग की ऊपरी सीमा दूसरे वर्ग की निचली सीमा होती है। प्रत्येक वर्गान्तर की ऊपरी सीमा उस वर्गान्तर में सम्मिलित नहीं होती है।

उदा :

Marks	10-15	15-20	20-25	25-30	30-35	35-40
Frequency	4	5	8	5	4	2

२. समावेशी श्रंखला : इसमें किसी वर्ग की ऊपरी सीमा का मूल्य भी उसी वर्ग में शामिल होता है।

उदा :

Marks	10-14	15-19	20-24	25-29	30-34
Frequency	4	5	8	5	4

४. संचयी आवृत्ति श्रंखला : जिसमें आवृत्तियों को वर्गानुसार अलग–अलग न रख कर संचयी रुप में जोड़ दिया जाता है।

इसके दो विधियाँ है –

१. यदि संचयी आवृत्ति वर्ग उच्च सीमा के आधार पर लिखी जाए, तो उस दशा मे 'से कम' शब्द का प्रयोग किया जाता है।

२. यदि संचयी आवृत्ति निम्न सीमा के आधार पर लिखी जाए तो उस दशा में 'से अधिक' शब्द लिखा जाता है।

खुले सिरे वाली श्रंखला: इसमें प्रथम वर्ग की निम्न सीमा तथा अंतिम वर्ग की उच्च सीमा नहीं दो हुई होती।

उदाहरण –

Marks	5 से कम	5-10	10-15	15-20	20 से अधिक
Frequency	4	5	8	5	4

इस श्रंखला की दोनों सीमाओं को ज्ञात करने के लिए प्रायः इनके निकट वर्गों के विस्तार को ही उसका विस्तार मान लिया जाता है।

अति लघु, उत्तर रुपी प्रश्न (१ अंक)

१. वर्गीकरण किसे कहते हैं?

२. आवृत्ति से क्या समझते हैं?

३. व्यक्तिगत श्रंखला से क्या अभिप्राय हैं?

लघु उत्तर रुपी प्रश्न

१. अपवर्जी श्रंखला और समावेशी श्रंखला में अंतर स्पष्ट कीजिए।

२. विविक्त श्रंखला और संतत श्रंखला में अंतर स्पष्ट कीजिए।

३. इन अवधारणाओं का वर्णन करे।

(१) वर्गान्तर (२) व्यक्तिगत श्रंखला (३) आवृत्ति वितरण

अध्याय ४

आंकडों का प्रस्तुतीकरण

आँकडों के प्रस्तुतीकरण के तीन प्रकार :

१. पाठ्य या वर्णात्मक २. सारणीयन

३. चित्रमय प्रदर्शन ४. ग्राफीय प्रदर्शन

१) पाठ्य प्रस्तुतीकरण – आँकडें अध्ययन के पाठ्य का एक अंश होते है।

२) सारणीयन – आँकडों को काँलम और पंक्तियों में संगठित करना।

एक सारणी के भाग

१) सारणी की संख्या २) शीर्षक ३) पंक्ति शीर्षक

४) उपशीर्षक ५) सारणी का क्षेत्र

६) टिप्पणी ७) स्रोत

सारणी का प्रारुप

सारणी संख्या

शीर्षक

पंक्ति शीर्षक काँलम शीर्षक या उपशीर्षक

	सारणी का क्षेत्र

टिप्पणी :

स्रोत :

सारणियों के प्रकार

१) सरल या एक गुण वाली सारणी – आँकडों की एक ही विशेषता का वर्णन किया जाता है।

२) द्विगुणी सारणी – आंकडों की दो विशेषता को प्रस्तुत करती है।

३) बहुगुणी सारणी – आंकडों की तीन या तीन से अधिक गुणों को प्रकट करती है।

सारणीयन के गुण

१) सरल और संक्षिप्त प्रस्तुतीकरण

२) तुलना में सुविधा

३) सतत विश्लेषण

४) मित्ययी

* * *

(३) आकडों का चित्रीय प्रस्तुतीकरण : अ) दण्ड आरेख ब) वृतीय आरेख

अ) दण्ड आरेख – आकडों को दण्डों के रुप में प्रकट किया जाता है।

प्रकार

अ) सरल दण्ड आरेख:– एक ही प्रकार के संख्यात्मक तथ्यों के विभिन्न मूल्यों को दण्डों में प्रकट करते है।

ब) बहुगुणी दण्ड आरेख:– जो दो या दो से अधिक तथ्यों के आंकडों को प्रस्तुत करता है।

स) उपविभाजित दण्ड आरेख:– किसी तथ्य के कुल मूल्य और उपविभाजन को प्रस्तुत करता है।

२) वृत्तीय आरेख:– एक वृत को कई भागों में बाँट कर आंकडों के सापेक्ष मूल्यों को प्रस्तुत किया जाता है।

आवृत्ति चित्र

अ) आयतचित्र – सतत श्रृंखला से संबंधित मदों तथा उनकी आवृतियों को आयतों के रुप में ग्राफ पेपर पर प्रदर्शित किया जाता है।

ब) बहुभुज – आयतचित्र के प्रत्येक आयत के शीर्ष के मध्य बिन्दुओं को सरल रेखाओं द्वारा मिलाकर बनाया जाता है।

स) आवृत्ति वक्र – बहुभुज का मुक्त हस्त रीति से खींचा हुआ सरलित रुप है।

ड़) ओजाइव या तोरण वक्र – वह वक्र जो ग्राफ पेपर पर संचयी आवृत्तियों को अंकित करके बनाया जाता है।

* * *

रेखीय ग्राफ या कालिक श्रृंखला ग्राफ

ग्राफ की रचना के नियम

१. उपयुक्त शीर्षक

२. पैमाने का चुनाव

३. कृत्रिम आधार रेखा का प्रयोग

४. विभिन्न प्रकार की रेखाओं का प्रयोग

५. आंकडों की सारणी

एक चर वाले ग्राफ – जिसमें समय के सापेक्ष केवल एक ही चर दिया जाता है।

दो या दो से अधिक चरों वाले ग्राफ – वे ग्राफ जो विभिन्न समय से संबंधित दो या दो से अधिक तथ्यों से संबंधित आँकडे प्रस्तुत करते है।

ग्राफी प्रदर्श के लाभ

१. सरल व सुबोध सूचना
२. अधिक समय तक याद रहना
३. आकर्षक और प्रभावशाली
४. सूचना के साथ मनोरंजन

ग्राफीय प्रदर्शन की सीमाए

१. सीमित उपयोग

२. दुरुपयोग

३. केवल प्राथमिक निष्कर्ष

संख्यात्मक प्रश्न

१. निम्नलिखित सूचना को सारणी में प्रस्तुत कीजिए।

अ) संकाय के अनुसार : कला, विज्ञान और वाणिज्य

ब) कक्षा के अनुसार : ११ वीं और १२ वीं

स) लिंग के अनुसार : लडके और लडकियाँ

२. सारणी के मुख्य रुप कौन से है?

३. संख्यिकीय सारणीयों के मुख्य भागों का वर्णन करें।

४. सारणीयन के मुख्य लाभ लिखिए।

५. निम्न को उपविभाजित दण्ड आरेख में प्रस्तुत कीजिए।

वर्ष	गेंहूँ	चावल	चना	कुल
2003	30	20	10	60
2004	45	30	15	90

६. निम्न आंकडों को एक वृतीय आरेख में प्रस्तुत कीजिए।

मदें	प्रतिशत व्यय
मज़दूरी	२५
ईंट	१५
सीमेंट	२०
इस्पात	१५
लकडी	१०
निरीक्षण	१५

७. बहुगुणी दण्ड आरेख में निम्न को प्रस्तुत कीजिए।

वर्ष	निर्यात	आयात
2004-05	375	500
2005-06	456	660
2006-07	570	840
2007-08	450	620

८. आयतचित्र, आवृति बहुभुज और आवृति वक्र को निम्नलिखित आंकडो की सहायता से बनाइए।

अंक :	0-10	10-20	20-30	30-40	40-50	50-60
विद्यार्थियों की संख्या :	10	16	20	20	22	15

९. निम्नलिखित को कालिक श्रृंखला ग्राफ पर प्रदर्शित कीजिए।

वर्ष	2000	2001	2002	2003	2004	2005
बिक्री	2155	2201	2250	2190	2095	2170

अध्याय ५

केन्द्रीय प्रवृत्ति के माप

(Measures of Central Tendency)

१. औसत:– एक ऐसा मूल्य जो सारी श्रेणी का प्रतिनिधित्व करता है।

२. औसतों के उद्देश्य:–

अ) संक्षिप्त विवरण: जटिल आंकडों को संक्षिप्त प्रस्तुत करना।

ब) तुलना: आंकड़ो के दो या दो से अधिक समूहो की तुलना की जा सकती है।

स) नीति निर्धारण:– आर्थिक नीतियों के निर्धारण में औसत के अनुमान से सहायता मिलती है।

ड़) सांख्यकीय विश्लेषण काफी सीमा तक औसत के अनुमान पर आधारित है।

३. एक अच्छे औसत के आवश्यक गुण:–

१) स्पष्ट और स्थिर परिभाषा
२) प्रतिनिधित्व
३) सरलता
४) प्रतिदर्श के परिवर्तन का न्यूनतम प्रभाव
५) बीजगणितीय विवेचन
६) सभी मूल्यों पर आधारित

४. सांख्यिकी औसत के प्रकार

१) समांतर माध्य
२) माध्यिका
३) बहुलक
४) चतुर्थक

समांतर माध्य

५. प्रत्यति विधि लघु विधि

व्यक्तिगत श्रंखला

खण्डित आवृत्ति श्रंखला

आवृति वितरण श्रंखला

६) भारित माध्य की गणना

७. <u>समान्तर माध्य के गुण:–</u>

१) सरलता
२) निश्चितता
३) सभी मूल्यों पर आधारित
४) बीजगणितीय विवेचन
५) तुलना का आधार
६) स्थिरता

८. <u>समान्तर माध्य के दोष</u>

१) सीमांत मूल्यों का प्रभाव
२) सदैव प्रतिनिधित्व मूल्य नहीं है
३) हास्यप्रद निष्कर्ष
४) गलत निष्कर्ष

<u>माध्यिका</u>

९. किसी श्रंखला की वह संख्या जो इस धंखला को दो बराबर भागों में बाँट देती है।

१०. माध्यिका की गणना

व्यक्तिगत श्रंखला आवृत्ति विन्यास/संतत श्रंखला

११. <u>माध्यिका के गुण</u>

१) सरलता
२) सीमांत मूल्यों के प्रभाव से मुक्त
३) निश्चितता
४) ग्राफिक प्रदर्शन
५) अपूर्ण तथ्यों में भी संभव

१२. <u>माध्यिका के दोष</u>

१) प्रतिनिधित्व का अभाव२) अवस्निक
३) बीजगणितीय विवेचन का अभाव

<u>बहुलक</u>

१३. किसी श्रंखला के वह मूल्य जो श्रंखला में सबसे अधिक बार आता है।

१४. <u>बहुलक की गणना</u>

१) व्यक्तिगत श्रंखला
   अ) निरीक्षण द्वारा
   ब) व्यतिगत श्रंखला को विवक्त श्रंखला में बदलकर

२) विविकत आवृत्ति श्रंखला में गणना

अ) निरीक्षण विधि

ब) समूहीकरण सारणी

स) विश्लेषण सारणी

३) आवृत्ति वितरण श्रंखला में वहुलक की गणना

अ) निरीक्षण विधि सूत्र $Z = 1_1 + f_1 - f_0$

ब) सामूहिककरण विधि $2f1 - F_0 - F_2 \times i$

अ) वहुलक के गुण

– सरल एवं लोकप्रिय

– सीमान्त इकाइयों का कम प्रभाव

– बिन्दु रेखीय निर्धारण

– सबसे अच्छा प्रतिनिधित्व

– सभी आवृत्तियों की गणना आवश्यक नहीं।

ब) बहुलक के अवगुण

– अनिश्चित व अस्पष्ट

– बीज गणितीय प्रयोग के लिए उपयुक्त नही है।

– कठिन

– समूही करण की जरिल प्रक्रिया

– अति सीमान्त आवृत्तियों की अवेहलना

चतुर्थक

यदि किसी श्रंखला को चार बराबर भागों में बाँटा जाता है तो प्रथम चतुर्थक को Q_1 तथा तीसरे चतुर्थक को Q_3 कहते हैं।

<u>Q_1 और Q_3 की गणना</u>

व्यक्तिगत तथा खंडित श्रंखला

Q_1 = Size of item

Q_1 = Size of 3 item

आवृत्ति वितरण श्रंखला

Q_1 का वर्ग अंतराल = Size of (N/4)th item

Q_3 का वर्ग अंतराल = Size of 3(N/4)th item

<u>अति लघु उत्तर रुपी प्रश्न</u> (१ अंक)

१. औसत किसे कहते हैं?

२. माध्यिका की परिभाषा दीजिए।

३. बहुलक की परिभाषा दीजिए।

<u>लघु उत्तर रुपी प्रश्न</u>

१. सांख्यिकीय औसत के चार उद्देश्य बताइए।

२. एक आदर्श माध्य के चार गुण बताइए।

३. समांतर माध्य के चार गुण लिखिए।

४. समांतर माध्य के चार दोष लिखिए।

५. बहुलक से क्या अभिप्राय है? बहुलक के लाभों, हनियों लिखिए।

निम्नलिखित श्रंखला के समांतर माध्य, माध्यिका और बहुलक ज्ञात कीजिए।

आयु (वर्ष में)	20-25	25-30	30-35	35-40	40-45	45-50	50-55	55-60
संख्या	50	70	100	180	150	120	70	60

अध्याय ६

परिक्षेपण के माप

(Measures of Dispersion)

परिक्षेपण मदों के विचरण का माप है।

परिक्षेपण के माप से उद्देश्य

१. श्रंखला के औसत मूल्य से, मदों के विभिन्न मूल्यों की औसत दूरी ज्ञात करना।

२. श्रंखला की बनावट के बारे में सूचना प्राप्त करना।

३. मद मूल्यों का सीमा विस्तार।

४. दो या अधिक श्रंखलाओं में पाई जाने वाली असमानता की तुलना

५. माध्य श्रंखला का सही प्रतिनिधित्व कर रहा है या नहीं।

परिक्षेपण के प्रकार

१. निरपेक्ष माप: जिन्हें उन्हीं इकाइयों में व्यक्त किया जाता है जिनमें मूल आंकडें होते हैं।

२) सापेक्ष माप:– जिसमें आँकडे के अंतर को अनुपात या प्रतिशत के रुप में व्यक्त किया जाता है।

परिक्षेपण ज्ञान करने की विधियाँ

	निरपेक्ष माप	सापेक्ष माप
१.	परास	परास गुणांक
२.	चतुर्थक विचलन, अंतर चतुर्थक परास	चतुर्थक विचलन गुणांक
३.	माध्य विचलन	माध्य विचलन गुणांक
४.	मानक विचलन	मानक विचलन गुणांक
५.	लारेंज वक्र	

परास

किसी श्रंखला में अधिकतम एवं न्यूनतम मानों के बीच का अंतर

व्यक्तिगत श्रंखला — विविकत श्रंखला/संतत श्रंखला

$R = L - S$

L = अधिकतम मान R = L – S

S = न्यूनतम मान

परास गुणांक

$CR = \frac{L - S}{L + S}$

२) <u>परास के गुण</u>

अ) सरल ब) विस्तृत प्रयोग

<u>परास के दोष</u>

१) अस्थिर

२) सभी मूल्यों पर आधारित नही है

३) श्रंखला की बनावट की जानकारी का ज्ञान न देना

४) खुले सिरे वाली आवृत्ति बितरण के लिए अनुपयुक्त

अंतर चतुर्थक परास (Inter Quartile Range)

अंतर चतुर्थक परास : $Q_3 - Q_1$

चतुर्थक विचलन : $\frac{Q_3 - Q_1}{2}$

चतुर्थक विचलन गुणांक : $\frac{Q_3 - Q_1}{Q_3 + Q_1}$

<u>चतुर्थक विचलण के गुण</u>

१. सरल

२. सीमांत मूल्यों का कम प्रभाव

<u>चतुर्थक विचलण के दोष</u>

१. सभी मूल्यों पर आधारित नहीं।

२. श्रंखला की बनावट अज्ञात।

३. अस्थिरता

माध्य विचलन

एक श्रंखला के किसी औसत मूल्य से निकाले गए विचलनों के जोड के समांतर माध्य को विचलन कहा जाता है।

मूल्यों के विचलन निकालते समय बीजगणतीय चिह्न + तथा – को छोड दिया जाता है।

माध्य विचलन की गणना

व्यक्तिगत श्रंखला	विविक्त श्रंखला/सतत श्रंखला
$M.D = \frac{\sum(D)}{N}$	$M.D = \frac{\sum f D)}{\sum f}$

(D) = माध्यिका द्वारा

मदों का विचलन

चिह्नों से उपेक्षित

माध्य विचलन का गुणांक

$= \frac{M.D}{\text{समांतर माध्य या माध्यिका}}$

माध्य विचलण के गुण

१. सरल

२. सभी मूल्यों पर आधारित

३. सीमांत मूल्यों से कम प्रभावित

माध्य विचलण के दोष

१. अशुद्धि

२. बीजगणितीय प्रयोग नही

३. अविश्वसनीय

मानक विचलन (σ)

इसे विचलन वर्ग माध्य मूल्य भी कहा जाता है।

मानक विचलन समांतर माध्य से लिए गए विचलनों के वर्गों के माध्य का वर्गमूल है।

मानक विचलन के गणना

विधि	व्यक्तिगत श्रंखला	विविक्त श्रंखला/संतत श्रंखला
१. प्रत्यक्ष विधि		
२. लघु विधि		
३. पद विचलन विधि		

मानक विचलन का गुणांक =

विचरण गुणांक =

मानक विचलन के गुण

१. सभी मूल्यों पर आधारित
२. स्पष्ट व निश्चित माप
३. प्रतिचयन परिवर्तनों का कम से कम प्रभाव
४. बीज गणितीय अध्ययन

मानक विचलन के दोष

१. कठिन
२. सीमांत मूल्यों का अधिक महत्व

लारेज वक्र

ग्राफीक विधि के प्रयोग द्वारा परिक्षेपण का प्रदर्शन किया जाता है।

लारेंज वक्र समान वितरण रेखा से वास्तविक वितरण के विचलन का माप है।

लारेंज वक्र एक संचयी प्रतिशत वक्र है।

<u>अति लघु उत्तर रुपी प्रश्न</u> (१ अंक)

१. परास से क्या अभिप्राय है?

२. लारेंज वक्र क्या है?

३. विचरण गुणांक से क्या अभिप्राय है?

<u>लघु उत्तर रुपी प्रश्न</u>

१. मानक विचलन के मुख्य दोष कौन–कौन से हैं?

२. मानक विचलन के गुण कौन से हैं?

३. माध्य विचलन के किन्ही दो गुण और दोष लिखिए।

<u>निम्नलिखित वितरण के मानक विचलन ज्ञात कीजिए।</u>

अंक	10-20	20-30	30-40	40-50	50-60	60-70	70-80	80-90
विद्यार्थियों की संख्या	19	3	2	9	24	2	0	1

अध्याय ७

<u>सह–संबंध</u> (Correlation)

सह–संबंध – सांख्यिकीय तकनीक जिससे विभिन्न चरों के मात्रात्मक संबंध की गणना करते है।

<u>सह–संबंध के प्रकार:</u>

१. धनात्मक सह–संबंध – जब दो चरों में परिवर्तन एक ही दिशा की ओर होती है।

२. ऋणात्मक सह–संबंध – जब चरों में परिवर्तन विपरीत दिशा की ओर होता है।

३. समरेखीय सह–संबंध – जब दो चरों में स्थाई रुप में समान अनुपात में परिवर्तन होता है।

४. अरेखीय सह–संबंध – जब दो चरों में परिवर्तन का अनुपात असमान होता है।

५. सरल सह–संबंध – जब केवल दो चरों के संबंधों का ही अध्ययन किया जाता है।

६. बहुमुखी सह–संबंध – जब तीन या तीन से अधिक चरों के संबंधों का एक साथ अध्ययन किया जाता हैं।

<u>सह–संबंध का परिमाण</u>

१. पूर्ण सह–संबंध

   १) पूर्ण धनात्मक – सह–संबंध गुणांक +1 होता है।

   २) पूर्ण ऋणात्मक – सह–संबंध गुणांक –1 होता है।

२. सह–संबंध की अनुपस्थिति – सह–संबंध गुणांक शून्य है।

३. सह–संबंध के सीमित परिमाण

   अ) उच्च – गुणांक 0.75 और 1 के बीच में होता है।

   ब) मध्यम – गुणांक 0.25 और 0.75 के बीच में होता है।

   स) निम्न – गुणांक 0 और 0.25 के बीच में होता है।

   सह–संबंध ज्ञात करने की विधियाँ

   अ) प्रकीर्ण आरेख विधि

   ब) कार्ल पियरसन का सह–संबंध गुणांक

   स) स्पीयरमेन का श्रेणी अंतर सह–संबंध गुणांक

अ) प्रकीर्ण आरेख: आंकडो के दो समूह के संबंधों के अनुमान को प्रकट करता है।

<u>गुण</u>

१. सरल और आकर्षक तरीका है।

२. तुरंत पता चल जाता है कि दो श्रृंखलाओं के मूल्य में संबंध है या नहीं।

<u>दोष</u>

१. सह–संबंध के परिमाण के बारे में कोई निश्चित जानकारी प्राप्त नहीं होती।

२. इस विधि–द्वारा सह–संबंध का संख्यात्मक माप संभव नहीं है।

ब) कार्ल पियरसन का सह–संबंध गुणांक

r = सह–संबंध गुणांक

$X = X - X$

$Y = Y - Y$

$\sigma_X = X$ श्रेणी का मानक विचलन

$\sigma_Y = Y$ श्रेणी का मानक विचलन

N = जोड़ों की संख्या

अथवा

r =

X= (X-X); Y = (Y=Y)

लघु विधि –

r =

dx = X-A

dy = Y-A

$\sum dx\ dy$ = dx और dy के गुणाफल का जोड़

$\sum dx^2$ = dx कें वर्गों का जोड़

$\sum dy^2$ = dy कें वर्गों का जोड़

$\sum dx$ = X श्रेणी के विचलनों का जोड़

$\sum dy$ = Y श्रेणी के विचलनों का जोड़

N = मदों की कुल संख्या

स) स्पीयरमेन का श्रेणी अंतर सह–संबंध गुणांक

$$r_s = 1 - \frac{6\sum D^2}{N^3-N}$$

D = श्रेणी अंतर

N = जोडों की संख्या

r_s =

M = उन मदों की संख्या जिनके मान समान है।

<u>गुण</u>

१. समझने में सरल है।

२. गुणात्मक श्रृंखलाओं में प्रयोग किया जा सकता है।

<u>दोष</u>

१. समूह आवृति आवंटन श्रृंखलालों में प्रयोग नहीं किया जा सकता है।

२. २० से अधिक मदों वाली मदमालाओं पर नहीं किया जा सकता।

<u>प्रश्न</u> (३/४/६ अंको वाले प्रश्न)

४ अंक

१. कीमत और पूर्ति में सह–संबंध ज्ञात कीजिए।

कीमत :	4	6	8	15	20
पूर्ति :	10	15	20	25	30

२. माँग और कीमत के मध्य सह संबंध ज्ञात कीजिए।

कीमत :	5	10	15	20	25
माँग :	40	35	30	25	20

३. सह–संबंध गुणांक निकालिए।

X	:	20	11	72	65	43	29	50
Y	:	60	63	26	35	43	51	37

३ अंक

१. सह–संबंध ज्ञात करने की प्रकीर्ण आरेख विधि का वर्णन कीजिए।

२. सह–संबंध के प्रकारों का वर्णन कीजिए।

६ अंक

१. हिन्दी में अंक : 80 78 75 75 68 67 60 59

अंग्रेजी में अंक : 12 13 14 14 18 16 15 17

२. कार्ल पियरसन द्वारा सह–संबंध गुणांक निकालिए

आयात : 56 49 53 58 65 76 58

निर्यात : 42 44 58 55 89 98 66

३. श्रेणी अंतर सह–संबंध गुणांक निकालिए।

X	:	45	42	44	33	47	51	43	40	53	55
Y	:	27	24	23	16	25	26	18	15	12	10

अध्याय ८

सूचकांक या निर्देशांक

परिभाषा: सूचकांक एह ऐसी सांखियकी माप है जो समय, स्थान या अन्य विशेषता के आधार पर किसी पर आय मूल्यों के समय में होने वाले परिवर्तनो को प्रदर्शित करता है।

विशेषताए

१. परिवर्तनों का सापेक्ष माप

२. संख्यात्मक रुप में

३. औसत

सूचकांको के लाभ

१. कीमत स्वर में परिवर्तन

२. जीवन स्तर परिवर्तन का ज्ञान

३. वेतन तथा भत्तो में समन्वय

४. व्यापारी वर्ग के लिए उपयोगी

५. अपादन के बारे में जानकारी

सूचकाको की सीमाएं

१. पूर्ण सत्य नहीं

२. अन्तर्राष्ट्रीय तुलनासम्भव नहीं

३. समय का अंतर

४. सीमित उपयोग

५. भार देने का दोष

सूचकांकों के प्रकार

१. साधारण सूचकांक २. भारित सूचकांक

सूत्र .....

१) लास्पीयर की विधि –

२) पाश्चे की विधि सूत्र .....

३) धिशर का सूचकांक सूत्र .....

उपभोम्ता मूल्य सूचकांक की रचना

१) उपभोम्ता वर्ग का चुनाव २) परिवारिक बजर की जानकारी

३) आधार वर्ग का चुनाव ४) कीमता की जानकारी

उपभोक्ता कीमत सूचकाक बनाने की विधियां

१) समूहीकृत ..... विधि २) पारिवारिक ..... विधि

उपभोकता मूल्य सूचकांक का महत्व

१. मूल्य नारी का निर्धारण २. मजदूरी समायोजन

३. वास्तविक मूल्यों का माप ४. बाजारो का विश्लेषण

औधोगिक उत्पादन के सूचनांक की रचना

१. उद्योगों का वर्गीकरण २. खनन

३. बिनिर्माण ४. बिजली

सूत्र .....

<u>प्रश्नोत्तर</u>

१. सूचकांक क्या है? (१)

सूचकांक एक ऐसा साख्यिकीमाप है जो समय, स्थान या अन्य विशेषता के आधार पर किसी पर मे होने वाले परिवर्तनों का प्रदर्शित करता है।

२. सूचकांको की प्रमुख विशेषताए बताइए। (३ अंक)

१) परिवर्तनो के सापेक्ष माप २) संख्यात्मक रुप में व्यक्त

३) औसत

नोट अन्य प्रश्नोत्तर तथा गणना भाग स्वयं करें।

अध्याय ९

Unit IV

सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग : अर्थशास्त्र में परियोजना की रचना

परियोजना का अर्थ – एक ऐसी गतिविधि जो एक निश्चित उद्देश्य की प्राप्ति के लिए किया जाता है।

परियोजना रिपोर्ट तैयार करने के आवश्यक चरण:–

१. उद्देश्य

२. प्रश्नावली की रुपरेखा

३. एक प्रतिदर्श की रचना

४. आंकडों का संकलन

५. आंकडों का वर्गीकरण

६. आंकडों का प्रस्तुतीकरण और विश्लेषण

७. आंकडों का निर्वचन

प्रश्न (४ अंक)

१. परियोजना रिपोर्ट बनाने के विभिन्न चरण क्या हैं?

प्रश्न (१ अंक)

१. परियोजना का अर्थ समझाइए।

अध्याय १

स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारतीय अर्धव्यवस्था

प्र १. स्वतंत्रता के समय भारतीय कृषि की अवस्था कैसी थी?

उत्तर: १) उत्पादकता का निम्न स्तर

२) उच्च कोटि की सुमेधता

३) भू–स्वामी द्वारा कृषक का भरपूर शोषण

४) भूमि के स्वामी तथा उसे जोतने वाले के बीच चौड़ी खाई

प्र २. स्वतंत्रता प्राप्ति के समय औधोगिक क्षेत्र की स्थिति कैसी थी?

उत्तर: १) राज्य की बिभेदमूलक तटकर नीति

२) राज दरबारों का लोप होना

३) मशीनों द्वारा निर्मित वस्तुओं से प्रतियोगिता

४) माँग का नया रुप

५) भारत में रेलवे का आगमन

६) आधुनिक उद्योग का निराशाजनक विकास

प्र ३. ब्रिटिश शासन के अन्तर्गत विदेशी व्यापार को स्थिति कैसी थी?

उत्तर: भारतीय अर्थव्यवस्था के औपनि वेशिक शोषण के कारण, भारत कच्चे माल तथा प्राथमिक वस्तुओं का शुद्ध निर्यातक बन गया। दूसरी ओर, यह ब्रिटिश उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तुओं का शुद्ध आयातक वन गया। ब्रिटिश सरकार की औपनिवेशिक नीति के कारण भारत के विदेशी व्यापार पर ब्रिटेन सरकार का एकाधिकारी नियंत्रण हो गया। अधिकांश निर्यात तथा आयात भारत तथा ब्रिटिश के बीच सीमित हो गए।

प्र ४. ब्रिटिश शासन के दौरान जनांकिकीय रुपरेखा कैसी थी?

उत्तर: १) जन्म दर और मृत्यु दर दोनो उच्चे थे – लगभग ४८ तथा ४० प्रति हजार जो कि देश में पायी जाने वाली निर्धनता की व्याख्या हैं।

२) शिशु मृत्य दर बहुत ऊंची थी जो कि लगभग २१८ प्रति हजार थी। इसकी तुलना में आज यह ५७ प्रति हजार हैं।

३) जीवन अवधि केवल ३२ वर्ष थी, जब कि वर्तमान में यह बढ़कर ६५.४ वर्ष हो गयी है।

४) साक्षरता दर लगभग १६ प्रतिशत थी। यह भी सामाजिक तथा आर्थिक पिधड़ेपन की निशानी है।

प्र ५. स्वतंत्रता के समय पेशेवर ढ़ांचा कैसा था?

उत्तर: १) कृषि – मुख्य व्यवसाय था जिसमें लगभग ७२.७% प्रतिशत कार्यकारी जनसंख्या कृषि में लगी हुई थी।

२) उद्योग – व्यवसाय का उभरता स्रोत या जिसमें कार्यकारी जनसंख्या का केवल १०.१ प्रतिशत भाग निर्माण उद्योंगों इत्यादि में लगा हुआ था।

३) असन्तुलित विकास – इस समय केवल प्राथमिक क्षेत्र का विकास हुआ का तथा द्वितियक तथा तृतीयक क्षेत्रों का विकास अपने शैशव काल में था।

प्र ६. स्वतंत्रता प्राप्ति के समय आधारिक संरचना कैसी थी?

उत्तर: ब्रिटिश शासन के दौरान यातयात तथा संचार के क्षेत्र में कुछ आधारिक संरचना का विकास किया गया था। रेलवे के विकास के साध–साध डाक–तार, कुछेक बन्दरगाओं तथा सड़कों का निर्माण तथा विकास भी हुआ।

हाँलाकि इन सभी का विकास अपने उपनिवेशी हितों को बढ़ावा देश था न कि भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास की प्रक्रिया की गति को तीव्र बनाना था।

अध्याय २

<u>भारतीय अर्थव्यवस्था</u> (१९५०–१९९०)

अर्थव्यवस्था के प्रकार– → बाजार अर्थव्यवस्था

→ समाजवादी अर्थव्यवस्था

→ मिश्रित अर्थव्यवस्था

योजना आयोग का गठन (पंचवर्षीय योजनाए)

१९५०

योजनाओं के उद्देश

– वृद्धि – आधुनिकता

– आत्म निर्धरिता – समानता

कृषि – भूमिसुधार

– हरित क्रान्ति – वाजार अधिशेष – सहायिकी

उद्योग एवं व्यापार

१९५६ की औद्योगिक नीति प्रस्ताव

– छोटे पैमाने के उद्योग

विभिन्न औद्योगिक नीतियों का विकास पर प्रभाव

१९४८ की औद्योगिक नीति

<u>अति लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर</u> (१ अंक)

१. प्राथमिक क्षेत्र से क्या अभिप्राय है?

प्राथमिक क्षेत्र मे कृषि, वानिकी, वन आदि को शामिल किया जाता है प्राकृतिक स्त्रोत इसमें शामिल किया जाते है।

२. द्वितीय क्षेत्र से क्या अभिप्राय है?

यह वह क्षेत्र है जिसमें उद्यम एक प्रचार की वस्तु को दूसरे प्रकार में परिवर्तित करते है।

३. तृतीयक क्षेत्र का क्या अभिप्राय है?

तृतीयक क्षेत्र वह क्षेत्र है जो सेवाओं का उत्पादन करता है।

<u>लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर</u> (३/४ अंक)

१. स्वतंत्रता के समय भारतीय अर्थ व्यवस्था की प्रमुख विशेषताएं बताइए।

– कृषि आजीविका का प्रमुख स्त्रोत

– अपर्याप्त कृषि उत्पादन

– कृषि का सीमित व्यापारी करण

– आधारभूत उद्योग का अभाव

२. योजना आयोग की स्थापना कब हुई? इसके प्रमुख उद्देश्य क्या हैं?

योजना आयोग की स्थापना १९५० में हुई।

उद्देश्य

– आधुनिकता – विकास

– आत्मनिर्भरता – समानता

<u>दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर</u> (६ अंक)

१. स्वतंत्रता के समय भारतीय अर्थव्यवस्था के पिछड़े पन के प्रमुख कारणों की व्याख्या करें।

– उत्पादकता का निम्न स्तर – निम्न कोटि की तकनीकी

– सरकार की ओर से उदासीनता – सिचाई के साधनों का अभाव

– कृषकों को उचित प्रशिक्षण का आभाव

२. द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्र में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

१) द्वितीयक क्षेत्र

अ) उद्योग ब) निर्माण

२) तृतीयक क्षेत्र

अ) बैकिंग ब) वीमा स) परिवहन ड) संचार ड़) व्यापार

अध्याय ३

नई आर्थिक नीति या अधिक सुधार

प्र १ आर्थिक सुधार क्या हैं?

उत्तर: सन् १९९१ से भारत सरकार ने देश को आर्थिक संकट से निकालने तथा विकास को गति को तेज करने के लिए विभिन्न आर्थिक सुधार आरंभ किए। इसे आर्थिक सुधार कहते हैं।

प्र २. आर्थिक सुधारों की आवश्यकता क्यों पड़ी?

उत्तर: इसकी आवश्यकता निम्न कारणों से पड़ी:–

– राजकोषीय घाटे में वृद्धि

– प्रतिकूल भुगतान संतुलन में वृद्धि

– खाड़ी संकट

– विदेशी विनिमय के भंडारो में कमी

– कीमतो में वृद्धि

– सार्वजनिक क्षेत्र के उघमों का कार्य संतोषजनक न होना।

प्र ३. नई आर्थिक नीति के मुख्य विशेषताओं को बताइए।

उत्तर: नई आर्थिक नीति के तीन मुख्य तत्व हैं:–

अ) उदारीकरण:– सरकार द्वारा लगाये गये प्रत्यक्ष या भौतिक नियंत्रणों से अर्थव्यवस्था की मुक्ति

<u>उदारीकरण के अंतर्गत आर्थिक सुधार</u>

– औद्योगिक लाइसेंसिंग का उन्मूलन

– उत्पादन क्षेत्र से आरक्षण हटाना

– उत्पादन क्षमता का विकास

– पूंजीगत पदार्थो के आयात की स्वतंत्रता

ब) निजीकरण:– यह वह सामान्य प्रक्रिया है जिसके द्वारा निजी क्षेत्र किसी सरकारी उद्यम का मालिक बन जाता हैं या उसका प्रबंध करता हैं।

निजीकरण के उपाय:

– सार्वजनिक क्षेत्र का संकुचन

– सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों में सरकार का विनिवेश

– सार्वजनिक उद्यमों के शेयरों की विक्री।

स) वैश्षीकरण : इससे अभिप्राय विश्व अर्थव्यवस्था में आये खुलेपन, बढ़ती हुई परस्पर आर्थिक निर्भरता तथा आर्थिक एकीकरण के फैलाव से हैं।

वैशीकरण के उपाय:

– विदेशी विशेष की साम्या सीमा में वृद्धि

– आर्थिक परिवर्तनीयता

– दीर्घकालीन व्यापार नीति

ड) नई आर्थिक नीती के सकारात्मक प्रभावों को बताइए।

उत्तर: – एक कंपायमान अर्थव्यवस्था

– औद्योगिक उत्पादन के लिए स्फूर्तिदायक

– राजकोषीय घाटे पर रोक

– मुदा–स्फीर्ति पर रोक

– उपभोक्ता की प्रमुख

– विदेशी विनिमय कोषों में पर्याप्त वृद्धि

– निजी विदेशी निवेश का प्रवाह

– एकापिकारी बाजार से प्रतियोगी बाजार

प्र ५ नई आर्थिक के नकारात्मक प्रभावों को बताइए।

उत्तर: – कृषि की अवट्टेलना

– विकास प्रक्रिया का शहरी केन्द्रीयकरण

– आर्थिक औपनिवेशवाद

– उपभोक्तावाद का फैलाव

– एक–तरीका संवृद्धि प्रक्रिया

– सांस्कृतिक हास

शिक्षण–सामग्री कक्षा–११

विषय : अर्थशास्त्रा

अध्याय ४ – भारतीय अर्थव्यवस्था की वर्तमान चुनौतियां

निर्धनता

निर्धनता से अभिप्राय है जीवन के लिए न्यूनतम उपयोग आवश्यकताओं की प्राप्ति का न होना।

निर्धनता के प्रकार

१. सापेक्ष निर्धनता – सापेक्ष निर्धनता से अभिप्राय विभिन्न वर्गो, प्रदेशो या दूसरे देशों की तुलना में पाई जानेवाली निर्धनता से है। जिस देश या वर्ग के लोगों का जीवन निर्वाह स्तर नीचा होता है वे उच्च निर्वाह स्तर के लोगों या देश की तुलना में गरीब या सापेक्ष रुप से निर्धन माने जाते है।

२. निरपेक्ष निर्धनता – निरपेक्ष निर्धनता से अभिप्राय किसी देश की आर्थिक अवस्था को ध्यान मे रखते हुए निर्धनता के माप से है। भारत में निरपेक्ष निर्धनता का अनुमान लगाने के लिए निर्धनता रेखा की धारणा का प्रयोग किया गया है।

निर्धनता का श्रेणी करण – श्रेणी १ चिरकालिक निर्धनता – वे जो सदैव निर्धनवने रहते है और जो सामान्यता निर्धन रहते है। उदाहरण भूमि रहित श्रमिक और अनियमित भजदूर।

श्रेणी २ अल्प कालिक निर्धन – (१) वे सभी व्यक्ति जो निरन्तर निर्धन और गैर निर्धन वर्गो के बीच आता जाता रहता है जैसे मौसमी मजदूर और (२) अल्पकालिक निर्धन

श्रेणी ३ कभी निर्धननही – वे व्यक्ति जो कभी निर्धन नहीं होते, इन्हें गैर निर्धन कहा जाता है।

यह अनुमान लगाया गया है कि तमिलनाडु, उत्तरप्रदेश, बिहार, उड़ीस तथा मध्यप्रदेश में निर्धनों की संख्या सबसे अधिक है। उत्तरप्रदेश की लगभग ३१.२ प्रतिशत बिहार की ४२.६ प्रतिशत, उड़ीसा की ४७.२ प्रतिशत, मध्यप्रदेश की ३७.४ प्रतिशत अनुभानित जनसंख्या निर्धनता रेखा से नीचे रह रही है।

निर्धनता के कारण

१. राष्ट्रीय उत्पाद का निम्न स्तर – भारत का कुल राष्ट्रीय उत्पादन जनसंख्या की तुलना में काफी कम है। इस कारण भी प्रति व्यक्ति आय कम रही है।

२. विकास की कम दर – भारत की पंचवर्षीय योजनाओं मे विकास की दर बहुत कम रही है। योजनाओ की अवधि में सफल घरेलू उत्पाद की विकास दर लगभग ४ प्रतिशत रही है। परन्तु जनसंख्या की वृद्धि दर लगभग २ प्रतिशत होने से प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि केवल २–४ प्रतिशत हुई है।

३. <u>जनसंख्या का अधिक दवाव</u> – भारत में जनसंख्या उत्पन्न द्रुतिगत से वढ़ रही है, इस वृद्धि का कारण पिछले कई वर्षो से मृत्यु दर का तो कम हो जाना पर जन्म दर का लगभग स्थिर रहना है।

४. <u>स्फीतिक दवाब</u> – उत्पादन की नीची दर तथा जनसंख्या वृद्धि की ऊंची दर के फलस्वरुप भारत जैसी अल्पविकसित अर्थव्यवस्थाएं स्फीतिक दवाब के जाल में फंस जाती है। मुद्रा स्फीति भारतीय अर्थव्यवस्था का एक स्थायी लक्षण बना हुआ है।

५. <u>पूँजी की अपर्याप्तता</u> – पूँजी आर्थिक विकास का एक सहायक तत्व है। पूँजी संचय को किसी देश की उत्पादन क्षमता के एक सूचक के रुप में प्रयोग किया जा सकता है। निम्न पूँजी निर्माण का अर्थ है कम उत्पादन क्षमता और इसलिए निर्धनता।

६. <u>आधारिक संरचना का अभाव</u> – आर्थिक आधारित संरचना के प्रमुख घटक जैसे ऊर्जा, यातायात तथा संचार और सामाजिक आधारित संरचना के प्रमुख घटक जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य तथा निवास सेवाएं बहुत बुरी अवस्था मे है। संवृद्धि तथा विकास के कार्यक्रम में ये सभी एक आधार शिला का कार्य करते है।

* * * * *

<u>निर्धनता को दूर करने के उपाय</u>

१. आर्थिक विकास की वृद्धि का गति को बढ़ाना
२. आय की असमानता को कम करना
३. जमसंख्या की वृद्धि दर में कमी
४. अन्य उपाय –

१) कृषि का विकास
२) कीमत स्तर में स्थिरता
३) बेरोजगार का उन्मूलन
४) उत्पादन तकनीक में परिवर्तन
५) न्यूनताम आवश्यकताओ की सन्तुष्टि
६) पिछड़े क्षेत्रो पर विशेष ध्यान
७) स्वयं रोजगार के लिए अवसर

<u>सरकार द्वारा निर्धनता को दूर करने के लिए किए गए</u>

उपाय – (१) स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना

– इस योजना मे स्वरोजगार के लिए पहले से लागू सभी योजनाओ को शामिल कर लिया गया है। जैसे–

(१) समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम

(२) स्वरोजगार के लिए ग्रामीण युवाओं का प्रशिक्षण कार्यक्रम

२) <u>संपूर्ण ग्रमीण रोजगार योजना</u> – यह योजना। सितंबर २००१ को शुरु की गई थी। जवाहर ग्राम समृद्धि योजना तथा रोजगार आश्वासन योजना को इस योजना में मिला दिया गया है।

३. <u>प्रधानमंत्री ग्रामोदय योजना</u> – (१) प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (२) प्रधानमंत्री ग्रामीण आवास योजना (३) प्रधानमंत्री ग्रामीण – पेयजल योजना

४. जयप्रकाश रोजगार गारन्टी योजना

५. स्वर्ण जयन्ती शहरी रोजगार योजना

६. प्रधानमंत्री रोजगार योजना

७. लघु तथा कुटीर उद्योगों का विकास

८. न्यूनतम आवश्यकता कार्यक्रम

९. बीस सूत्रीय कार्यक्रम

१०. महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारन्टी अधिनियम २००५

* * * * *

<u>अति लघु उत्तर रुपी प्रश्न</u> (१ अंक वाले प्रश्न)

१. गरीबी से आप क्या समझते है?

२. भारत में निर्धनता को दूर करने के लिए क्या उपाय किया जाना चाहिए?

३. भारत मे निरपेक्ष निर्धनता से क्या अभिप्राय है?

४. सापेक्ष निर्धनता से क्या अभिप्राय है?

५. निर्धनता रेखा की परिभाषा दीजिए।

६. भारत मे निर्धनता रेखा से नीचे कौन से व्यक्ति कहलाते है?

७. शिक्षित बेरोजगार युवाओं को रोजगार देने के लिए कौन सी योजना लागू की गई है?

<u>लघु उत्तर रुपी प्रश्न</u> (३/४ अंक)

१. सापेक्ष और निरपेक्ष गरीबी के मध्य अंतर की कारण करें।

२. निर्धनता से क्या अभिप्राय है? इसके मुख्य दो रुप कौन से है।

३. भारत में निर्धनता को हटाने के लिए तीन मुख्य सुझाव दें।

४. भारत सरकार ने निर्घनता दूर करने के लिए कौन से चार उपाय किए है?

५. स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना पर एक टिप्पणी लिखे।

६. निर्धनता तथा असमानता किस प्रकार एक दूसरे से सम्बन्धित है?

७. महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारन्टी योजना को समझाइए।

८. न्यूनतम आवश्यकता कार्यक्रम से क्या अभिप्राय है?

<u>दीर्घ उत्तरीय प्रश्न</u> (६ अंक वाले प्रश्न)

१. रोजगार गारन्टी एक्ट २००५ क्या है? क्या आप सोचते है कि भारत मे निर्धनता की समस्या के निवारण मे यह सहायता देगा?

२. भारत सरकार द्वारा निर्धनता उन्भूलन के लिए उठाए गए विभिन्न उपायों का वर्णन करें।

३. निर्धनता से क्या अभिप्राय है? भारत में निर्धनता के कारणों का वर्णन करे।

<u>अति लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर</u> (१ अंक)

१. गरीबी से अभिप्राय है जीवन के लिए न्यूनतम उपयोग आवश्यकताओं की प्राप्ति कानहोना है।

२. भारत में निर्धनता को दूर करने के लिए ग्रामीण क्षेत्रो मे विनिवेश करना चाहिए लघु तथा कुटीर उद्योगो का विकास करना चाहिए।

३. निरपेक्ष निर्धनता से अभिप्राय किसी देश की आर्थिक अवस्था को ध्यान में रजते हुए निर्धनता के माप से है।

४. सापेक्ष निर्धनता से अभिप्राय विभिन्न वर्गो, प्रदेशों या दूसरे देशो की तुलना में पायीजाने वाली निर्धनता से है?

५. निर्धनता रेखा की परिकल्पना सरकार के द्वारा की जाती है यदि किसी व्यक्ति के पास सरकार द्वारा निर्धारित आय है साधन नही है तो वह निर्धनता रेखा की परधि मे आता है।

६. BPL गरीबी रेखा से नीचे व्यक्ति सरकार द्वारा विशेष सुविधाए पाने के हकदार।

७. प्रधानमन्त्री शिक्षित रोजगार योजना।

<u>लघु उत्तरीय प्रश्नो के उत्तर</u> (३/४ अंक)

१. सापेक्ष गरीबी –

– सापेक्ष निर्धनता से अभिप्राय विभिन्न वर्गो प्रदेशो या दूसरे देशों की तुलना मे पायी जाने वाली निर्धनता से है।

– निरपेक्ष गरीबी – से अभिप्राय किसी देश की आर्थिक अवस्था को ध्यान मे रजते हुए निर्धनता के माप से है।

२. निर्धनता से अभिप्राय है जीवन के लिए न्यूनतम उपयोग आवश्यकताओं की प्राप्ति का न होना। सापेक्ष तथा निरपेक्ष निर्धनता के दो प्रकार है।

३. – आर्थिक विकास की वृद्धि की गति को बढ़ाना
– आय की असमानता को कम करना
– जनसंख्य की वृद्धि दर में कभी
– कृषि का विकास, कीमत स्तर मे स्थिरता

४. – स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना
– समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम
– सम्पूर्ण ग्रामीण रोजगार योजना
– प्रधानमन्त्री ग्रामोदय योजना

५. यह योजना। सितम्बर २००१ को शुरु की गई थी। जवाहर ग्राम समृद्धि योजना तथा रोजगार आश्वासन योजना को इस योजना मे मिला दिया गया है।

६. निर्धन व्यक्ति के काम करने के अवसर कम होते उसकी आय कम होती है तथा जीवन स्तर भी निम्न होता यही सभी कारण उसे समाज के दूसरे लोगो की दृष्टि में असमानता की दृष्टि से देखा जाता है इस प्रकार निर्धनता तथा असमानता एक दूसरे से सम्बन्धित है।

७. राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारन्टी अधिनियम करने के इच्छुक है, उन्हें १०० दिनों की न्यूनतम अवधि के लिए काम दिया जायेगा।

८. पाँचवी योजना में निर्धन लोगों के जीवन स्तर को ऊँचा उठाने के लिए न्यूनतम आवश्यकता कार्यक्रम लागू किया गया। ये कार्यक्रम हैं – प्रारम्भिक शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, ग्रामीण स्वास्थ्य, ग्रामीण जल आपूर्ति, ग्रामीण सड़के, ग्रामीण – विधुतीकरण, ग्रामीण आवाक आदि।

<u>दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर</u> (६ अंक)

१. इस एक्ट के अन्तर्गत वे सभी व्यक्ति जो न्यूनतम मजदूरी दर पर काम करने के इच्छुक है उन्हे १०० दिनों की न्यूनतम अवधि के लिए काम दिया जायेगा। जो रोज़गार प्राप्त करना चाहते है उन्हे उन ग्रामीण क्षेत्रो में पहुंचना होगा जहां रोजगार कार्य शुरु किया जा रहा है। ग्रामीण क्षेत्र के लोगो की आय मे वृद्धि होगी तथा गरीबी की समस्या दूर होगी।

२. – स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजेगार योजना

– संपूर्ण ग्रामीण रोजगार योजना

– प्रधानमंत्री ग्रामोदय योजना

– जयप्रकाश रोजगार गारण्टी योजना

– स्वर्ण जयन्ती शहरी रोजगार योजना

– प्रधानमंत्री रोजगार योजना

– महात्मा गांधी राष्ट्रीया ग्रामीण रोजगार गारन्टी अधिनियम २००५

३. परिभाषा अति लघु उत्तरीय भाग में देखे

– राष्ट्रीय उत्पाद का निम्नस्तर

– विकास की कम दर

– जनसंख्या का अधिक दवाब

– स्फीतिक दवाब

– पूँजी की अपर्याप्ता

– आधरिक संरचना का अभाव

(संक्षेप मे समझाये)

अध्याय ५

मानव पूँजी निर्माण

मानव पूंजी – से अभिप्राय किसी देश में किसी समय विशेष पर पाए जाने वाले कौशल तथा सुविज्ञता के भण्डार से है।

– समय के साथ, मानव पूंजी के स्टौक मे होने वाली वृद्धि को प्रक्रिया को मानव पूंजी निर्माण कहते है।

– <u>भौतिक पूंजी</u> – से अभिप्राय उत्पादन के उत्पादित साधनों के भण्डार से है इसमे मशीनो, उत्पादन करने उपकरणो तथा क्षेत्रों एवं उपकरणों को सम्मिलित लिए जाता है।

<u>वित्तीय पूंजी</u> – का अर्थ कम्पनियों के शेयर्स/स्टौक है, अथवा यह कम्पनियों की सम्पत्तियों के प्रति वित्तीय दावे होते है।

<u>मानव पूंजी निर्माण के स्त्रोत</u>

१. शिक्षा पर काम

२. स्वास्थ्य पर व्यय

३. नौकरी के साथ प्रशिक्षण

४. व्यस्कों के लिए अध्ययन का कार्यक्रम

५. स्थान्तरण

६. सूचना पर व्यय

आर्थिक संवृद्धि में मानव पूंजी निर्माण की भूमिका

– संवृद्धि के भावात्मक तथा भौतिक वातावरण में परिवर्तन

– भौतिक पूंजी की उच्चतर उत्पादन

– कौशल में नवीनता

– समानता तथा सहभागिता की उच्च दर

<u>भारत में मानव पूंजी निर्माण की समस्याए</u>

– तेजी से वढ़ रही जनसंख्या

– वृद्धि जीवी अपवाह

– अपयप्ति मानव शक्ति आयोजन

– कृषि में काम के दौरान प्रशिक्षण की अपर्याप्तता

– निम्न शौक्षिक मानव

<u>शिक्षा का महत्व तथा इसके उद्देश्य</u>

१. शिक्षा से अच्छे नागारिक बनते है।

२. इससे ज्ञान तथा, प्रौधोगिकी का विकास होता है।

३. लोगो के मास्तष्क का विकास होता है।

४. इसके द्वारा लोगों का व्यक्तित्व विकसित होता हैं।

<u>भारत में शिक्षा क्षेत्र का विकास</u>

१. सामान्य शिक्षा का विस्तार

२. प्राथमिक शिक्षा

३. माध्यामिक शिक्षा– केन्द्रीय विद्यालय, नवोदय विद्यालय

४. उच्च शिक्षा

५. तकनीकी, चिकित्सा तथा कृषि संबंधी शिक्षा

६. सर्वाशिक्षा अभियान

७. ग्रामीण शिक्षा

८. व्यक्त तथा महिला शिक्षा

<u>शिक्षा अभी भी एक चुनौती पूर्ण समस्या</u>

९. निरक्षर (की बड़ी संख्या)

२. अपर्याया व्यावसायिक शिक्षा

३. लिंग भेद

४. ग्रामीण पहुंचस्तर का निम्न होना

५. शिक्षा पर कम खर्च

६. निजीकण

<u>अति लघु उत्तरीय प्रश्न</u> **(अंक ०१)**

१. मानव पूंजी की परिभाषाए।

२. मानव पूंजी निर्माण का क्या अर्थ है?

३. शिक्षा निवेश क्या है?

४. काम के दौरान प्रशिक्षण क्या है?

५. मानव विकास क्या है?

<u>लघु उत्तरीय प्रश्न</u> **(३/४ अंक)**

१. मानव पूंजी निर्माण के तीन प्रमुख संसाधन क्या है?

२. भारत में शिक्षा के मुख्य उद्देश्यों का वर्णन करें।

३. क्या तेजी से बढ़रही जनसंख्या मानव पूंजी निर्माण की प्रक्रिया में बाधक है।

४. सूचना पर क्या मानव पूंजी निर्माण का एक संसाधन है? कैसे? व्याख्या कीजिए।

<u>अतिलघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर</u> **(०१ अंक प्रत्येक के लिए)**

१. मानव पूंजी से अभिप्राय किसी देश में किसी समय विशेष पर पाए जाने वाले कौशल तथा सुविज्ञता के भण्डार से है।

२. मानव पूंजी निर्मण वह प्रक्रिया है। जिसके द्वारा ऐसे व्यक्तियों को पाना तथा उनकी संख्या में वृद्धि करना है जिनमे कौशल शिक्षा तथा अनुभव के गुण पाए जाए जो कि किसी देश के आर्थिक तथा राजनैतिक विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण होते हैं।

३. शिक्षा में निवेश से तात्पर्य उस निवेश से है सरकार द्वारा या निजी व्यक्ति के द्वारा शिक्षा के विकास के लिए किया जाए।

४. काम के दौरान प्रशिक्षण का अर्थ उस प्रशिक्षण से है जो अपने कर्मचारियो को उनकी दक्षता बढ़ाने के लिए दिया जाता है।

५. मानव के ज्ञान तथा कौशल में सुधार के लिए किये जाने वाले विराम को मानव विराम कहते है।

<u>लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर</u> **(३/४ अंक)**

१. शिक्षा पर लाभ

- स्वास्थ्य पर व्यय
- नौकरी के साथ प्रशिक्षण

– व्यस्कों के लिए अध्ययन का कार्यक्रम

– संक्षेप में मे व्याख्या करे

२. अच्छे नागरिक

– विज्ञान तथा प्रौधोगिकी का विकास

– देश के संसाधनो के प्रयोग मे सहायक

– मानव व्यक्तित्व का विकास

– लोगों के मानसिक क्षितिज या विकास

३. तेजी से वढ़ रही जनसंख्या के अनुपात में विनिवेश नही किया जाता है इस कारण मानव के रोजगार के स्तर में कभी रहती है और समयवध्य तरीके से पूंजी निर्माण की प्रक्रिया वाधक होती है।

४. कौशल की प्राप्ति तथा इसके प्रयोग के लिए आवश्यक है। कि नौकरी के स्थानो तथा विशिष्ट कौशल निर्माण की शैक्षिणक संस्थाओं के बारे में पूंजी सूचना प्राप्त हो। तदनुसार सूचना पर किया गया काम भी मानव पूंजी निर्माण के स्त्रोतो मे शामिल किया जाता है।

<u>दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर</u> (६ अंक)

१. मानव पूंजी से अभिप्राय किसी देश में किसी समय विशेष पर पाए जाने वाले कौशल तथा सुविज्ञता के भण्डार से है।

भौतिक पूंजी से अभिप्राय उत्पादन के उत्पादित साधनों के भंडार से है इसमें मशीनें से है इसमें मशीनें, उत्पादन करने वाले प्लान्टस (Plants) तथा यन्त्रो एवं उपकरणों को सम्मिलित किया जाता है।

२. मानव पूंजी मे निवेश से उत्पादन का स्तर बढ़ता है रोजगार के नए=२ अवसर प्रदान होते है आय के साधन बढ़ते है विकास मे सहायक सकल घरेलू उत्पाद के वृद्धि तकनीरी विकास देश के विकास के सहायक।

३. शिक्षा मानव संसाधन विकास क एक आवश्यक तत्व है। ज्ञान तथा कौशल मे सुधार करने के लिए शिक्षा अध्यायन, प्रशिक्षण तथा सीखने की विशेष कर स्कूलों तथा कालेजो मे एक प्रक्रिया है। शिक्षा से अच्छे नागरिक बनते है। इससे विज्ञान तथा प्रौधोगिकी का विकास होता है। लोगो के मस्तिष्क का विकास होता है। इसके द्वारा लोगों का व्यक्तित्व विकसित होता है। इसके द्वारा लोगों का व्यक्तित्व विकास। (अन्य उपयोगी बिन्दु)

४. श्रम वल की उत्पादन क्षमता मे वृद्धि करके मानव पूंजी निर्माण सहभागिता की दर मे वृद्धि करके मानव

पूंजी निर्माण सहभागिता की दर में वृद्धि करता है। सहभागिता की दर जितनी ऊंची होती है समाज में आर्थिक तथा सामाजिक समानता का अंश भी उतना ही अधिक होता है सहभागिता की ऊंची दर तथा समानता का उच्च अंश, सामाजिक न्याय के साथ संवृद्धि जिसे विकास कहा जाता है, वे सूचक होते है।

<u>दीर्घ उत्तरीय प्रश्न</u> (६ अंक)

१. मानव पूंजी तथा भौतिक पूंजी के अंतर कीजिए।
२. मानव पूंजी निर्माण के संसाधन कया है?
३. व्याख्या कीजिए कि कैसे मानव पूंजी में निवेश संवृद्धि की प्रक्रिया को तीव्र बनाता है।
४. राष्ट्र के विकास के लिए शिक्षा कैसे एक महत्वपूर्ण आगत है। व्याख्या कीजिए।
४. सामाजिक समानता तथा सहभागिता की दर में मानव पूंजी निर्माण किस प्रकार वृद्धि करता है? व्याख्य कीजिए।

<u>ग्रामीण विकास</u>

ग्रामीण विकास का अर्थ है ग्रामीण क्षेत्रों के सामाजिक एवं आर्थिक उत्थान के लिए एक नियोजित कार्य विधि ग्रामीण क्षेत्रों में लटकती और उभरती चुनौतियों पर ध्यान केन्द्रित करती है।

<u>ग्रामीण विकास के लिए नियोजित कार्य विधि के मुख्य मुद्दे</u>

१) आधारिक संरचना का विकास
२) मानवीय पूंजी निर्माण
३) उत्पादन संसाधनों का विकास
४) निर्धनता निवारण
५) भूमि सुधार

<u>ग्रामीण साख</u>

ग्रामीण साख का अर्थ कृषि परिवारों के लिए साख की उपलब्धता है। एक सामान्य भारतीय किसान की साख जरुरतों का वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया जा सकता है।

१. अल्प कालीन ऋण/साख की आवश्यकता
२. मध्य कालीन ऋण/साख की आवश्यकता
३. दीर्घ कालीन ऋण/साख की आवश्यकता

<u>ग्रामीण साण के स्त्रोत</u>

अ) गैर संस्थागत स्त्रोत – भूस्वामी, गांव का वनिया तथा महाजन।

ब) संस्थागत स्त्रोत – सरकार सहकारी समितिया व्यापारिक बैंक तथा क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों को शामिल किया जा सकता है।

- सहकारी साख समितियां
- स्टेट बैंक और इण्डिया तथा व्यापारिक बैंक
- क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक तथा भूमि विकास बैंक
- कृषि तथा ग्रामीण विकास का राष्ट्रीय बैंक

अध्याय ६

कृषि विपणन

फसल कटाई के बाद किसानों को अपनी फसल/उत्पाद को अपने खेत पर संग्रह करने की आवश्यकता होती है, उसे प्रशंसकरण करना होता है। वर्गीकरण होता है और बाद में बाजार में बेचने से पहले पौकिंग करना होता है। कृषि विपणन में निम्न प्रक्रियाओं का शामिल किया का सकता है।

१. फसल कटाई के बाद उसको इकट्टा करना

२. उत्पाद का प्रसंस्करण करना

३. कोटि के अनुसार उत्पाद का वर्गीकरण करना

४. उत्पाद की विकी तय करना जब की मत लाभप्रद है।

विपणन प्रणाली को सुधारने के लिए सरकार द्वारा किए गए उपाय।

१. नियमित मण्डियां

२. सहकारी कृषि विपणन सम्मितिया

३. भण्डार गृह सुविधाओं का प्रावधान

४. सस्तायातायात चुमा भातायात

५. सूचना का प्रसार

६. न्यूनतम समर्थन कीमत नीति

<u>ग्रामीण जनसंख्या के लिए रोजगार के गैर कृषि क्षेत्र</u>

१. पशु पालन – भारत में रोजगार का महत्वपूर्ण गैर कृषि क्षेत्र पशुपालन है जैसे जैसे हम सिंचित क्षेत्रो से गैर सिंचित सूखे या सूखे क्षेत्रों की ओर जाते है, पशु पालन कृषि का महत्व बढ़ता जाता है। आपरेशन फ्लड दुग्ध उत्पाद क्षेत्र में एक क्रान्ति है जो सन १९६६ में आरम्भ की गई थी इस प्रणाली के अन्तर्गत सभी सदस्य किसानों को बाजार में सामूहिक विक्री के लिए अपने दूध के उत्पाद को एकत्रित करना होता है।

२. <u>मत्स्य पालन</u> – केरल, महाराष्ट्र, गुजरात, तथा तमिलनाडु भारत में मछुआरों का समुदाय, मछली पकड़ने के अन्तवर्ती और महासागर स्त्रोतो पर लगभग समान रुप से निर्भर करता है। इस क्षेत्र का सकल घरेलू उत्पाद में योगदान २ प्रतिशत है।

३. <u>उघान विज्ञान वागवानी</u> – ग्रामीण क्षेत्रो में उघान विज्ञान या नागवानी उत्पादक गतिविधियों में विविधीकरण

का एक अन्य क्षेत्र है। नागान उत्पादों फल, सब्जियां, रेशेदार फसलें, सुगन्धित फूल पौधे आधि शामिल होते हैं। ऊंची फसल उत्पादकता १९९१–२००३ के वर्षो के बीच के समय को बागवानी का ''स्वर्णि क्रान्ति'' का काल माना जाता है।

४. <u>कटीर और घरेलू उद्योग</u> – कुटीर और घरेलू उद्योग आय निर्माण के पारम्परिक गैर कृषि स्त्रोत है। परम्परा से ही इस उद्योग पर कातने, बुनने, रंगने तथा ब्लीचिंग क्रियाओं का प्रभुत्व रहा है। साबुन बनाना, गुड़िया बनाना, मशरुम की खेती तथा मधुमाक्खियों का पालन प्रमुख उदाहरण है।

<u>जैविक कृषि और धारणीय विकास</u>

जैविक कृषि आधारिक रुप से वह परपाटी है जो खेती के लिए जैविक आगतो के प्रयोग पर निर्भर करती है। जैविक आगत में मूलतः पशु खाद हरी खाद शामिल है।

<u>जैविक कृषि क्यों?</u>

परम्परागत कृषि की तुलना में जैविक कृषि के कुछ उल्लेखनीय लाभ है जो इस प्रकार हैं –

१. गैर नवीकरणीय संसाधनों के प्रयोग का त्याग करती है।

२. पर्यावरण मित्र

३. मृदा उपजाऊपन को बनाए जाती है

४. स्वास्त्थवर्धक एवं स्वादिष्ट भोजन

५. छोटे और सीमान्त किसानो के लिए सस्ती प्रौधोगिकी

<u>अति लघु उत्तरीय प्रश्न</u> (१ अंक)

१. कृषि साख से आप क्या समझते हैं?

२. ग्रामीण विकास संबंधी चार महत्वपूर्ण समस्याओं के नाम बताइए।

३. कृषि साख के गैर संस्थागत स्त्रोतो की परिभाषा दीजिए।

४. जैविक कृषि से आप क्या समझते हैं?

५. कृषि साज के दो संस्थागत स्त्रोतों के नाम बताइए।

काम करने के योगय एवं इच्छुक है वर्तमान में इस कार्यक्रम का नाम महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गास्टी एक्ट २००५ है।

<u>दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर</u> **(६ अंक)**

१. भारत में वेरोजगारी के कारणों का वर्णन करें।

– धीमा आर्थिक विकास – जनसंख्या में तीव्र वृद्धि

– कृषि एवं मौसमी धन्धा – सिचाई सुविधाओं की कमी

– संयुक्त परिवार प्रणाली – कुटीर और लघु उद्योगो का पतन

२. वेरोजगारी की समस्या को हल करने के लिए किए गए प्रयासो की चर्चा कीजिए।

– उत्पादन में वृद्धि – उत्पादकता में वृद्धि

– पूंजी निर्माण की ऊंची दर – स्वयं रोजगार में लगे लोगो को अधिक सहायता

– शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन – औद्योगिक तकनीकी मे परिवर्तन

– योजनाओं में रोजगार कार्यक्रमा को अधिक महत्व

३. वेरोजगारी के आर्थिक एवं सामाजिक परिणामो की व्यवस्था कीजिए।

अ) आर्थिक परिणाम

– मानव शक्ति का अप्रयोग – उत्पादन की हानि

– पूंजी निर्माण मे गिरावट – कम उत्पादकता

ब) सामाजिक परिणाम

– जीवन की निम्न गुणवता – अत्याधिक असमानता

– सामाजिक अशान्ति – वर्ग संघर्ष

व्यापार (तथा धन्धें मे लगे होते है)

४. नियमित मजदूर कौन है?

नियमित मजदूरो को स्थापी वेतन पर रख जाता है यह लोग सभी प्रकार के लाभ पाने के अधिकारी है।

५. मौसमी वेरोजगारी से आप क्या समझते है?

मौसमी वेरोजगारी से आशय यह है कि खाली मौसम में अक्सर कृषि में काम करने वाले बेकार रहते है वह ५ व ७ महीने तक बेरोजगार रहते है मौसमी बेरोजगारी की श्रेणी में रहा जाता है।

<u>लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर</u> **(३/४ अंक)**

१. श्रम आपूर्ति तथा श्रम वल मे अन्तर स्पष्ट कीजिए।

<u>श्रम आपूर्ति</u>

विभिन्न मजदूरी दरों के अनुरुप श्रम की पूर्ति

काम करने वालों की संख्या स्थिर रहते हुए भी श्रम की आपूर्ति कम या अधिक हो सकती है।

<u>श्रम बल</u>

– वास्तव में काम कर रहे या काम करने के इच्छुक व्यक्तियों की संख्या

– क्योंकि इसे व्यक्तियों की संख्या के रुप में मापा जाता है।

२. भारत मे सहभागिता की दर को समझाइए।

– शहरी क्षेत्रो में सहभागिता की दर लगभग ३४ प्रतिशत है।

– ग्रामीण क्षेत्रों में सहभागिता की दर लगभग ४२ प्रतिशत है।

– देश मे सहभागिता की दर लगभग ४० प्रतिशत है।

३. भारत मे पेशेवर ढांचे का वर्गीकरण कीजिए।

– प्राथमिक क्षेत्र – कृषि वानिकी, मछली पकड़ना खनन आदि।

– द्वितियक क्षेत्र – निर्माण, विनिर्माण, विजली गैस आदि।

– तृतीयक क्षेत्र – व्यापार, परिवहन, संग्रहण तथा सेवाए।

४. ग्रामीण रोजगार गारन्टी एटंर २००५ क्या है?

राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गास्टी एक्ट २००५ मे लागू किया गया। ग्रामीण क्षेत्रो में यह एक्ट उन सभी व्यक्तियों को १०० दिन के लिए मजदूरी रोजगार की गारन्टी देता है जो निर्धनता रेजा से नीचे रहते है और सरकार द्वारा दी गई मजदूरी दर पर .....

अध्याय ७

रोजगार एवं बरोजगारी

वह व्यक्ति जो जीविका के लिए किसी प्रकार के रोजगार में लगा है कर्मी कहलाता है।

एक अर्थव्यवस्था में एक वर्ष के दौरान उत्पादित वस्तुओं तथा सेवाओं के कुल जोड़ को सकल घरेलू उत्पाद कहा जाता है स्वनियोजित मजदूर वें लोग होते है जो अपने ही व्यापार तथा धन्धे में लगे होते है।

भाड़े के मजदूर वें होते है जो दूसरों के लिए काम करते है। अनियमित मज़दूरों को दैनिक मजदूरी पर रखा जाता है।

मालिक उन्हें नियमित आधार पर नही लगाते।

नियमित मजदूरों का नाम मालिकों के स्थायी वेतन पर रखा जाता है। ये लोग सभी प्रकार के सामाजिक सुरक्षा के लाभो जैसे पेंशन, उपदान तथा भविष्य निधि के अधिकारी होते है।

<u>भारत में कार्यवल का आकार</u>

१. हमारा अधिकांश कार्यवल ग्रामीण आधारित क्यों हैं।

२. महिला श्रमिकों का प्रतिशत निम्न तथा शहरी क्षेत्रों में और भी अधिक निम्न क्यो होता है।

<u>पेशेवर ढ़ांचा</u>

१. <u>प्राथमिक क्षेत्र मे</u> – कृषि, वानिकी, मछली पकड़ना, जनन आदि

२. द्वितीयक क्षेत्र – विनिर्माण, निर्माण, बिजली गैस तथा जल आपूर्ति

– ग्रामीण वेरोजगार, शहरी वेरोजगार प्रकार

– बेरोजगारी के आर्थिक तथा सामाजिक परिणाम

सरकारी नीति और कार्यक्रम

<u>अति लभु उत्तरीय प्रश्न एवं उत्तर</u> (१ अंक)

१. कर्मी से आप क्या समझते हैं?

वह व्यक्ति जो जीविका के लिए किसी प्रकार के रोजगार में लगा है।

२. स्वनियो जित मजदूर कौन है?

स्वनियोजित मजदूर वे लोग होते है जो अपने ही कार्य में लगे रहते हैं।

<u>लघु उत्तरीय प्रश्न</u> **(३/४ अंक)**

१. NABARD पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

२. भारतीय किसान को साख की क्यों जरुरत पड़ती है?

३. जैविक खेती के क्या लाभ है?

४. सहकारी साख समितियों के दो आधार भूत उद्देश्य बताइए।

<u>दीर्घ उत्तरीय प्रश्न</u>

१. ग्रामीण विकास शब्द से आप क्या समझते हैं। ग्रामीण विकास के मुख्य मुद्दे क्या हैं?

२. किसानों द्वारा विभिन्न उद्देश्यों के लिए ली जाने वाली साख की किस्मों की व्याख्या करें। गैर संस्थागत साख के महत्व को बताइए।

<u>अति लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर</u> **(१ अंक)**

१. कृषि कार्यो के लिए लिया जाने वाला ऋण कृषि साख कहलाता है।

२. सिचाई के स्थायी साधन – ग्रामीण क्षेत्रो मे साख सुविधाएं उपलब्ध कराना – कृषि और गैर कृषि क्रियाओं के लिए बिजली की उपलब्धता – ग्रामीण विपणन का विकास

३. परस्परागत रुप से किसान की साख संबंधी जरुरते गैर – संस्थागत स्त्रोतो से पूरी हुआ करती थी जैसे भूस्वामी, गांव का वनिया, महाजन।

४. जैविक खेती भौलिक रुप से खेती की एक बहप्रणाली है जो खेती के लिए जैविक आगतों के प्रयोग पर निर्भर करती है।

५. – सहकारी साख सामितियां

– क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक तथा भूमि विकास बैंक

<u>लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर</u> **(३/४ अंक)**

१. NABARD (कृषि तथा ग्रामीण विकास के राष्ट्रीय बैंक) एक शिखर संस्था जो ग्रामीण साख कार्यक्रमों में लगी सभी वित्तीय संस्थाओं की क्रियाओं या समन्वय करती है। इस संस्था के आने से ग्रामीण वित्त पहले से अधिक व्यवस्थित हो गया।

२. भारतीय किसान को साख की जरुरत कृषि कार्यो को सचारु रुप से करने के लिए पड़ती है इसमे विभिन्न कृषि यन्त्र खाद खरीदना सिचाई पर व्यय करना तथा घरेलू कार्यो जैसे शादी–विवाह जन्म मरण आदि अवसरो पर होने वाले खर्चो के लिए कृषि साख की जरुरत पड़ती है।

३. – गैर नवीकरणीय संसाधनों के प्रयोग का त्याग करती है।

– पर्यावरण मित्र

– मृदा उपजाऊ पन को बनाए रजती है।

– स्वास्थ्य वद्धिद एवं स्वादिष्ट भोजन

– छोटे और सीमान्त किसानों के लिए सस्ती प्रौधोगिकी

४. – किसानो को समय पर अधिक साख सुनिश्चित करना।

– ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महाजन के प्रभाव को हटाना।

– देश के सभी क्षेत्रो को साख सुविधाएं उपलब्ध कराना।

– विशेष कार्यक्रम के अनगित आने वाले क्षेत्रों को पयप्ति मात्रा में साख उपलब्ध कराना।

<u>दीर्घ उत्तरीय प्रश्नो के उत्तर</u> (६ अंक)

१. ग्रामीण विकास का अर्थ है ग्रामीण क्षेत्रों के सामाजिक एवं आर्थिक उत्थान के लिए एक नियोजित कार्य विधि नियोजित कार्यविधि – ग्रामीण क्षेत्रो में लटकती और उभरती चुनौतियों पर ध्यान केन्द्रित करती है।

– ग्रामीण क्षेत्रों में साख सुविधाओं को उपलब्ध कराना।
– ग्रामीण विपणन का विकास करना।
– यातायत के साधनों का विकास करना।
– कृषि और गैर कृषि क्रियाओं के लिए बिजली की उपलब्धता।
– सिचाई के स्थायी साधन।

२. कृषि साख के स्त्रोतों का वर्गीकरण संस्थागत और गैर संस्थागत स्त्रोतों में किया जाता है।

संस्थागत स्त्रोत – सहकारी साख समितियां
– स्टेट बैंक आफ इण्डिया तथा व्यापारिक बैंक
– क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक तथा भूमि विकास बैंक
– कृषि तथा ग्रामीण विकास का राष्ट्रीय बैंक

<u>गैर परम्परगत स्त्रोत</u> – परम्परागत रुप से किसान की साख संबंधी जरुरतों को पूरा करती है। पंचवार्षिक योजनाओ के आरंभिक वर्षो मे गैर संस्थागत साधन किसान की साख संबंधी ९३ प्रतिशत आवश्यकताओ को पूरा करते थे।

अध्याय ८

आधारिक संरचना

आधारिक संरचना आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन के उन मूल तत्वों को प्रकट करती है जो अर्थव्यवस्था की उत्पादन गतिविधियों में एक सहयोगी व्यवस्था के रुप में कार्य करते है।

<u>आर्थिक आधारिक सरचना</u> से अभिप्राय आर्थिक परिवर्तन के उन सभी तत्वो (जैसे शक्ति, परिवहन, तथा संचार) से है।

<u>सामाजिक आधारिक संरचना</u> से अभिप्राय सामाजिक परिवर्तन (जैसे स्कूल, कालेज, अस्पाताल, नर्सिग होम) के मूल तत्वो से है।

<u>भारत में आधारिक संरचना की स्थिति</u> – ऊर्जा (परम्परागत स्त्रोत), तथा गैर परम्परागत स्त्रोत दो भागों मे विभाजित है।

<u>स्वास्थ्य</u> – स्वास्थ्य संपूर्ण शारीरिक, मानसिक तथा सामाजिक कल्याण की अवस्था है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद स्वास्थ्य सेवाओं का विकास –

– मृत्युदर में कमी

– शिशु मृत्यु दर मे कमी

– औसत जिवन अवधि में वृद्धि

– जानलेवा बीमारियों पर नियंत्रण

– बच्चों की मृत्यु दर मे कमी

<u>अति लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर</u> (१ अंक)

१. आधारिक संरचना क्या है?

आधारिक संरचना आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन के उन मूल तत्वों को प्रकार करती है जो अर्थव्यवस्था की उत्पादन गतिविधियों में एक सहयोगी व्यवस्था के रुप में कार्य करते हैं।

२. आधारिक संरचना कितने भागों मे विभाजित किया गाय है?

– सामाजिक आधारिक संरचना। – आर्थिक आधारिक संरचना।

३. वाणिजियक ऊर्जा के दो उदाहरण दीजिए।

– कोयला – बिजली

४. गैर परम्परागत ऊर्जा के दो उदाहरण दीजिए।

– सौर ऊर्जा – वायु ऊर्जा

५. बिजली उत्पादन के दो स्त्रोत कौन रहे?

– जल विघुत स्टेशन – ताप विघुत स्टेशन

<u>लघु उत्तरीय प्रश्न</u> (३–४ अंक)

१. आर्थिक आधारिक संरचना को समझाइए।

आर्थिक आधारिक संरचना से अभिप्राय आर्थिक परिवर्तन के उन सभी तत्वो से है जो आर्थिक संवृद्धि की प्रक्रिया के लिए एक आधारशिला का कार्य करते हैं। अत एव शक्ति स्फूर्ति की प्रचुर उपलब्धता उप्पादन प्रक्रिया की गति में वृद्धि लाती है।

२. ऊर्जा के परम्परागत स्त्रोतो की व्याख्या कीजिए।

कोयला – १९५०–५१ में भारत में कोयले का उत्पादन ३२८ लाज रन था जो २००६–०७ में बढ़कर ४,३०८ लाखटन हो गया।

पेट्रोलियम – सन २००६–०७ में १.३२९ लाजरन की मांग की तुलना में पेट्रोलियम का कुल उत्पादन ३३० लाखटन था।

३. ऊर्जा के गैर परम्परगत स्त्रोतो को समझाइए।

– सौर ऊर्जा – वायु ऊर्जा

– वायोमान ऊर्जा – जियोथर्मल ऊर्जा

<u>दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर</u> (६ अंक)

१. ऊर्जा के परम्परागत स्त्रोतो तथा गैर परम्परागत स्त्रोतो का समझाइए।

परम्परागत स्त्रोत –

कोयला, पेट्रोलियम तथा बिजली शामिल है।

पिछलो कई दशको से कोयला तथा पेट्रोलियम का प्रयोग वातावरण की परवाह लिए कराह है।

वाणिज्यिक ऊर्जा के विभिन्न स्त्रोतों के रुप में इसका प्रयोग लम्बे समय से किया जारहा है।

ऊर्जा के गैर परम्परागत स्त्रोत –

– इसके सौर ऊर्जा, वायु ऊर्जा, वायोमान आदिशामिल है।

– इनमें अधिकतर (अभी भी प्रायोगिक अवस्थ मे है।

– वातावरण प्रदूषण को रोकने के दृष्टिकोण से प्रयोग।

२. भारत में शक्ति क्षेत्र कैसे एक आधारिक संरचना चुनौती है?

– बिजली का अपर्याप्त उत्पादन
– क्षमता का कम उपयोग
– बिजली बोर्डो को घाटे

} व्याख्या करें

३. स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद स्वास्थ्य सेवाओ के विकास का अवलोकन कीजिए।

– मृत्युदर मे कमी

– शिशुमृत्यु दर में कमी

– औसत जीवन अवधि में वृद्धि

– जानलेवा बीमारियों पर नियन्त्रण

– बच्चो की मृत्यु दर में कमी

अध्याय ९

पर्यावरण एवं धारणीय विकास

पर्यावरण के अन्तर्गत जल वायु और भूमि को तथा जल भूमि मनुष्यों और अन्य जीवित प्राणियों पौधों, सूक्ष्म जेवो तथा संपत्ति मे पाए जाने वाले अन्तर्संबंध को शामिल किया जाता है।

पर्यावरण के महत्व/कार्य

१. पर्यावरण उत्पादन के लिए संसाधन प्रदान करता है।
२. पर्यावरण जीवन धारणा का सहायक है।
३. पर्यावरण अपशिष्टों को आत्मसात करता है।
४. पर्यावरण जीवन की गुणवता को बढ़ाता है।

पर्यायवरण संबंधी दो मौलिक संस्थाएं

१. प्रदूषण की समस्था
२. प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक शोषण की समस्या

प्रदूषण – वायु, प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण

प्राकृतिक संसाधनो का अत्याधिक शोषण

* * *

प्राकृतिक साधनों से अभिप्राय वन, खनिज, भूमि आदि से है।

– वन विनाश – भूमि की अवनति

पर्यावरण अवनति के कारण

१. जनसंख्या विस्कोट
२. लोगो की निर्धनता
३. बढ़ता हुआ नगरीकरण
४. कीटिनाशक तथा रासायनिक उर्वरको का अधिक प्रयोग
५. तीव्र औद्योगीकरण
६. यातायात के साधनों का विविधिकरण
७. नागरिक मान दण्डो की अवमानना

पर्यावरण संरक्षण कैसे किया जाए

१. सामाजिक जागरुकता
२. जनसंख्या नियन्त्रण
३. पर्यावरण संरक्षण कानून का ..... पालन
४. वृक्षारोपण अभिमान
५. औद्योगिक तथा कृषि प्रदूषण पर नियन्त्रण
६. स्वच्छ जल का प्रबन्ध

पर्यावरण पर वर्तमान तथा प्राचिन विचार धारा

– धारणीय विकास की अवधारण

अति लघु उत्तरीय प्रश्न उत्तर (१ अंक)

१. पर्यावर्ण की परिभाषा दीजिए।

पर्यावरण उन सभी अवस्थाओं और उनके प्रभावों को कहा जाता है जो मानव जीवन को प्रभावित करते है।

२. पर्यावरण के जैविक तत्वों के दो उदाहरण दीजिए।

पौधे एवं जीवजन्तु (जैविक तत्व)

३. पर्यावरण संबंधी दो भौतिक संस्थाए कौन रहे?

प्रदूषण की समस्या

प्राकृतिक संसाधनो के अत्यधिक शोषण की समस्या

४. पर्यावरण अवनति के दो कारण लिखो –

– जनसंख्या विस्फोट – लोगों की निर्धनता

लघु उत्तरीय प्रश्न उत्तर (३/४ अंक)

१. ग्लोवल वर्मिग अवधारण का वर्णन कीजिए।

यह एक ऐसी अवस्था को सूचित करता है जहां पर्यावरण प्रदूषण एवं बनो–मूल्य के कारण विश्व के तापमान में लगातार वृद्धि होती जा रही है। ग्रीन टाउस गैसो के उत्सर्जन के कारण विश्व बाहरी भाग का तापमान बढ़ता जा रहा है जिसके कारण पिछले दशक में विश्व के तापमान में ०.६ सेल्सियस की वृद्धि हुई है। तापमान में वृद्धि ध्रुवीय वर्फ को पिघलने में सहायक सिद्ध हो रही है जो सामुद्रिक जल स्तर में वृद्धि का कारण है।

२. पर्यावरण अवनति के चार कारणो की व्याख्य कीजिए।

– जनसंख्या विस्लोट

– लोगो की निर्धनता

– बढ़ता हुआ नगरीकरण

– तीव्र औद्योगीकरण

– कटिनाशक तथा रासायनिक उर्वरकों का अधिक प्रयोग

३. भारत में जल प्रदूषण के प्रमुख कारण कौन रहे?

– घरेलू सीवरेज जो नदियों तथा नालो में मिल जाता है।

– उद्योगो का विसर्जित खतरनाक रसायन नदियों मे जाकर गिरता है।

– कृषि मे छिड़की कीटनाशक पदार्थ व दवाइयां मिट्टी के साथ बहकर नदियों मे मिल जाती है।

– थर्मल पावर हाउस द्वारा छोड़ी राख पानी में मिल जाती है।

<u>दीर्घ उत्तरीय प्रश्न उत्तर</u> **(६ अंक)**

१. पर्यावरण संरक्षण करने के लिए कौन २ से उपाए किए जाने चाहिए?

– सामाजिक जागरुकता
– जनसंख्या नियन्त्रण
– पर्यावरण संरक्षण कानून का सही से पालन
– वृक्षारोपण अभियान
– स्वच्छ जल का प्रबन्ध
– वृक्षा रोपण अभियान
– औद्योगिक तथा कृषि प्रदूषण पर नियंत्रण

२. धारणीय विकास की प्रमुख विशेषताएं कौन=२ है संक्षेप मे समझाइए।

– वास्तविक प्रति व्यक्ति आय तथा आर्थिक काल्याण में धारणीय वृद्धि

– प्राकृतिक साधनों का विचार पूर्वक प्रयोग

– प्रदूषण में वृद्धि न होना

– भावी पीढो की अपनी आवश्यकताओ को सन्तुष्ट करने की योग्यता में कभी न हो।

अध्याय १०
भारत, पाकिस्तान तथा चीन का विकास अनुभवः एक तुलनात्मक अध्ययन

भारत, पाकिस्तान तथा चीन पड़ोसी देश है

१. GDP दर में वृद्धि – १९४७ के बाद भारत तथा पाकिस्तान ने अपने नियोजित विकास कार्यक्रम की शुरु आत।

   चीन ने १९४९ विकास के कठोर मॉडल को अपनाया। १९५८ में ग्रेट लीप फारवाई अभिमान की शुरु आत की।

२. वृद्धि ढांचा – तीनों देशो मुख्यतः कृषि पर आधारित भारत पाकिस्तान की निर्भरता तृतीयक क्षेत्र पर चीन ने द्वितीयक क्षेत्र को बढ़ावा दिया।

जनसंख्यिक प्राचाल – भारत में विश्व की जनसंख्या का १५%

चीन में विश्व की जनसंख्या का २०%

विश्व जनसंख्या के लगभग ३५%

१९७९ से चीन में एक शिशु नीति

पाकिस्तान छोटा देश भारत की –

जनसंख्या का १/१० भाग

मानव विकास के प्राचल

– आयु प्रत्याशा – जितकी अधिक होगी उतना अच्छा।

– प्रौढ़ शिक्षादर – जितनी अधिक उतना अच्छा।

– शिशु मृत्युदर – जितनी कम उतना अच्छा

– भारत और पाकिस्तान की सामान्य

सफलताएं – प्रति व्यक्ति दर में पर्याप्त वृद्धि।

– खाद्य उत्पादन में स्व निर्भरता।

– हैत अर्थव्यवस्था प्रवृति में क्रमशः कमी

– जिन क्षेत्रों में भारत पाकिस्तान से आगे है।

– दक्ष श्रम शक्ति – शिक्षा में निवेश – स्वास्थ्य सुविधाएं

चीन भारत से आगे है –

– चीन में निर्धन वर्ग की ओर पर्याप्त ध्यान।

– कृषि संबंधी सुधार प्रभावी रुप से चलाया गया।

– सरकार की प्रोत्साहन नीति से निर्यातोन्मुखी विनिर्माण में अधिक वृद्धि।

– विशेष आर्थिक क्षेत्र के कारण विदेशी प्रत्यक्ष निवेश में वृद्धि।

<u>अति लघु उत्तरीय प्रश्न</u> **(१ अंक)**

१. भारत तथा पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था में दो समानता बताओ।

– मिश्रित अर्थव्यव्स्थाए

– कृषि पर आधारित

२. चीन में आर्थिक सुधार कब से शुरु किए गये।

१९७८

३. भारत में नई आर्थिक नीति कव शुरु की गई।

१९९१

४. एक शिशु नीति कहां लागू की गई।

चीन (१९७९)

५. पाकिस्तानी अर्थव्यवस्था की दो विशेषताएं बताइए।

– जनसंख्या वृद्धि – अनिश्चित राजैतिक व्यवस्था

<u>लघु उत्तरीय प्रश्न</u> **(३/४ अंक)**

१. भारत, पाकिस्तान तथा चीन के विकास की तुलनात्मक व्याख्या करे।

– आर्थिक सुधार से पहले तीनो देशो के विकास का निम्न स्तर

– चीन भारत तथा पाकिस्तान की तुलना के GDP वृद्धि में आगे।

– १०% के हिसाब से चीनी अर्थव्यवस्था में विकास।

– भारत और पाकिस्तान को अर्थव्यवस्था में यह वृद्धि दर वार्षिक ६ से ८% के बीच में है।

२. भारत और पाकिस्तान की सामान्य सफलताए लिखो।

– प्रतिव्यक्ति GDP दर में पर्याप्त वृद्धि

– खाद्य उत्पादन में स्वनिर्भरता

– द्वैत अर्थव्यवस्था प्रवृति में क्रमशः कमी।

– गरीबी की विवेचनात्मक रुप में कमी

३. भारत पाकिस्तान तथा चीन के नियोजित विकास कार्यक्रम को बताइए।

– भारत और पाकिस्तान मिश्रित अर्थव्यवस्था मॉडल

– चीन मे नियान्त्रित अर्थव्यवस्था मॉडल। उत्पादन के साधनो पर सरकार का नियंत्रण

<u>दीर्घ उत्तरीय प्रश्न</u> (६ अंक)

१. मानव विकास का प्राचल का वर्णन करो। (व्याख्या करे)

– आयु प्रत्याशा

– प्रौढ साक्षरता

– गरीवी रेखा के नीचे रहने वाली जनसंख्या का प्रतिशत

– शिशु मृत्युदर

– माह मृत्युदर

– कुपोषित जनसंख्या का प्रतिशत

२. भारत और पाकिस्तान की सामान्य विकलताएं लिखिए।

– चीन की तुलना में GDP वृद्धि दर की निम्न गति

– HDI क्रम में खराव प्रदर्शन

– निराशाजनक वित्तीय प्रबन्धन

– सप्रशासन की अपेक्षा राजनीतिक रुप से वने रहने का अधिक महत्व

३. पाकिस्तान मे गरीबी के पुनरुत्थान का आप कैसे वर्णन करेगें?

– कृषि में संस्थागत सुधार में कमी

– अच्छी उपज के लिए ज्यादातर अच्छे मौसमापर निर्भरता

– विदेशी विनिमय की आवश्यकता के लिए ज्यादातर विदेशी पूंजी पर निर्भरता

– राजनैतिक अस्थिरता एवं आंतरिक आशान्ति

– प्रतियोगी मूलक प्रति रक्षा व्यवस्था